हाथकरघा-अुद्योगके अुसूल

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाअी देसाअी अंक १६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १६ जून, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

पंचायतोंका कारोबार

गंभीरासे नूतन विद्यालयके आचार्य श्री छगनभाअी पटेल लिखते हैं :

"यह गांव पहले बड़ोदा राज्यके भादरण तालुकेमें था। अिस गांवमें अेक वर्षोंसे व्यवस्थित ग्रामपंचायत चलती थी।

"परंतु बड़ोदा राज्यके विलीनीकरणसे यहां कि ग्रामपंचायतको बम्बअी राज्यकी ग्रामपंचायतोंके नियमानुसार चलानेकी बात तय हुअी और अुसी आधार पर अुसका कामकाज शुरू करनेका निश्चय हुआ।

"यहां कि ग्रामपंचायतके पास बड़ोदा राज्यके नियमके अनुसार पंचायतोंको मिलनेवाली थोड़ी-बहुत जो रकम १९४७-४८ में बची थी, अुसकी मददसे १९४८-४९ और १९४९-५० के दो वर्षों तक पंचायतका सफाअी वगैराका काम जारी रखा।

"परंतु बम्बअी राज्यके नियमके मुताबिक वैतनिक मंत्रीकी नियुक्ति करना जरूरी होनेसे और सफाअी-कामके लिअे भंगी कामदारोंकी नियुक्ति दूसरे ही ढंगसे करनेका तय होनेसे पंचायतका केवल सफाअीका और आफिसका खर्च ही कअी गुना बढ़ गया।

"१९४९ के मअी महीनेमें बड़ोदा राज्यका विलीनीकरण होनेके बाद ही यहांकी पंचायतको बम्बअी राज्यके नियमके आधार पर चलानेके लिअे जो-जो बातें करनी जरूरी थीं, वे सब शुरू कर दी गअीं।

"मंत्रीकी नियुक्ति सितम्बर १९५० से की गअी। और जिन भंगी कामदारोंको १० रु० माहवार पर १९४९ में काम पर लगाया गया था, अुन्हें अुसी वेतन पर मार्च १९५१ तक चालू रखा। अुसके बाद अुनका मासिक वेतन १६ रु० कर दिया गया।

"अिस तरह अिस पंचायतका केवल मंत्री और भंगी कामदारोंका वार्षिक खर्च हीं डेढ़ हजारसे अूपर है। फिर भी अुसे आज तक बम्बअी राज्यके नियमके मुताबिक या बड़ोदा राज्यके नियमके मुताबिक सन् १९४८-४९ की भी कोअी मदद नहीं मिली।

"सन् १९४८-४९ में बड़ोदा राज्यने ग्रामपंचायतोंका नया कानून बनाकर अुस पर अमल शुरू किया। अुसके मुताबिक हरअेक ग्रामपंचायतको अुसके महसूलका १० प्रतिशत मिलना चाहिये था। वह भी विलीनीकरणके कारण अिन पंचायतोंको अभी तक नहीं मिला। अुसी तरह १९४९ के मअी महीनेके बाद बम्बअी राज्यके नियमके अनुसार महसूलका १५ प्रतिशत पंचायतोंको मिलना चाहिये था, वह भी १९४९-५० से लेकर आज तक नहीं मिला।

"अिसके अलावा, मंत्रीके वेतनकी और भंगी कामदारोंके वेतनकी जो ग्रान्ट बम्बअी राज्यके नियमानुसार अुनकी नियुक्तिके बाद मिलनी चाहिये थी, वह भी पिछले दो वर्षोंमें अेक बार भी नहीं दी गअी। हां, सन् १९५०-५१ के सालकी मंत्रीके वेतनकी ग्रान्ट अभी दो माह पहले जरूर मिली है।

"अैसी हालतमें ग्रामपंचायतें अपने तंत्रसे संबंध रखनेवाला ग्रामसुधारका काम या रोजमर्राके दूसरे छोटे-मोटे जरूरी काम किस तरह जारी रख सकती हैं?

"अगर नये नियमके अनुसार मकान-करकी रकम वसूल करनेका काम अिन पंचायतोंके हाथमें न होता, तो वे कभीकी बंद हो गअी होतीं। क्योंकि अिस स्थानीय मददके सिवाय अुनके हाथमें आज आयका दूसरा कोअी भी साधन नहीं रहा।

"सन् १९५०-५१ और १९५१-५२ में से हरअेक वर्षका साढ़े चारसे साढ़े पांच हजार रुपयेका जो बजट बनाया गया, अुसे जिला लोकल बोर्डने मंजूर किया है। लेकिन वह केवल कागजों तक ही सीमित है। क्योंकि अुसमें बताअी हुअी रकमें — नियमके अनुसार तय की हुअी सरकारी मदद पिछले दो वर्षसे यहांकी पंचायतोंको न मिलनेके कारण — खर्च नहीं की जा सकीं। अिसलिअे अुनका कोअी मतलब या अुपयोग नहीं रहा।

"अिस राज्यकी ग्रामपंचायतोंको यदि सक्रिय और सबल बनाना हो और अुनके जरिये ग्रामस्वराज्य या पंचायतराज्य कायम करना हो, तो यह काम अिस तरह कब — कितने वर्षोंमें और किस प्रकारसे पूरा हो सकेगा, अिसकी कल्पना की जा सकती है।

"लोकशाही ढंग पर चलनेवाले राज्यके आधारभूत स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंकी अगर अैसी अुपेक्षा की गअी, तो वह राज्य किस तरह शक्तिशाली, सुदृढ़ और लोकहितकारी बन सकेगा?

"आशा है, अिस राज्यके स्थानीय स्वराज्य-विभागकी अैसी बदनामी भरी ढीली नीतिको आप जरा भी बरदाश्त नहीं करेंगे और अुसमें नये प्राण फूंक कर राज्यकी हजारों ग्रामपंचायतोंको करोड़ों लोगोंकी सुख-सुविधाका अेक सबल और सजीव साधन बनानेके लिअे भरसक प्रयत्न करेंगे।"

जबसे हमारे देशमें ब्रिटिश पद्धतिकी म्युनिसिपैलिटियां, लोकल बोर्ड वगैरा संस्थायें कायम हुअीं, तबसे शायद ही अैसी कोअी

www.vinoba.in

संस्था होगी, जिसे पैसेकी कठिनाओ और परेशानी न अुठानी पड़ी हो। श्री छगनभाओ अैसी हालतको अेक क्षण भी बरदाश्त न करनेका आदेश देते हैं। लेकिन अगर आजके ढंग पर ही देशका शासन-तंत्र चलता रहा, तो ५० वर्षमें भी यह हालत नहीं सुधरेगी। और मकान-कर चाहे जितना बढ़ा कर भी यह घाटा पूरा न होगा। क्योंकि पंचायतों और म्युनिसिपैलिटियोंकी रचनाकी सारी बुनियाद ही गलत है।

हमें याद रखना चाहिये कि अिंग्लैण्डमें अैसी संस्थाअें अिसलिअे फली-फूलीं कि वह देश परदेशसे — खासकर हमारे देशसे — धन समेटकर ले जाता था। फिर भी हमारे गरीब देशकी तुलनामें वह वेतन वगैराका स्तर यहांसे कम रखता था। अब चूंकि परदेशसे धनराशिका वहां जाना कम हो गया है, अिसलिअे अुसे भी कठिनाओंका सामना करना पड़ेगा। कारण यह है कि अेक तरफ हमारा समाज-तंत्र मालिक-मजदूरकी प्रथाके अर्थशास्त्र पर चलता है, और राजतंत्र वेतन-प्रथाके यानी पैसेके अर्थशास्त्र पर चलता है। दूसरी तरफ हमारा संपत्ति-तंत्र बहुत बड़ी पूंजीवाले मालिकोंके हाथमें है और राजतंत्र मध्यमवर्गके यानी कम पूंजीवाले वेतन-जीवी लोगोंके हाथमें है।

जब राजतंत्र केवल बड़े पूंजीपतियोंके हाथमें थे, तब वे पंचायतें, म्युनिसिपैलिटियां और दूसरे कअी सार्वजनिक काम मुख्यतः वेतन-पद्धतिसे नहीं, बल्कि बेगार-पद्धतिसे चलाते थे। बेगार पूंजीशाहीका अेक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य अंग है। बेगार-पद्धतिसे बहुतसे काम होते थे, अिसलिअे पूंजीशाहीमें वेतनका खर्च और कर मामूलीसे होते थे। बेगारका श्रम अेक प्रकारका कर ही था। और वेतनका बड़ा भाग खुराक वगैरा चीजें देकर चुकाया जाता था। राज्यके महत्त्वपूर्ण सूत्रधार स्वयं मालदार होनेके कारण वेतन नहीं लेते थे। वेतन मध्यमवर्ग द्वारा चलनेवाली नौकरशाहीका महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य अंग है। अिसमें राज्यके सूत्रधारोंका — खुद राष्ट्रपतिसे लेकर छोटेसे छोटे चौकीदार तकका — निर्वाह वेतनसे ही होता है और सारे काम वेतन देकर ही कराये जा सकते हैं। वे खुद वेतन लिये बिना किसी तरहका काम करनेके लिअे तैयार नहीं होते, अिसलिअे श्रमरूपी करका नाम भी नहीं ले सकते। अुसी तरह वे खुद अुत्पादक श्रम करनेवाले नहीं होते, अिसलिअे सीधा-सामान द्वारा वेतन चुकानेकी बात नहीं कर सकते। देशका नेता भले राष्ट्रपति बने, मंत्री बने, प्रतिनिधि बने या सलाहकार बनें; प्रजाका अुपकार करनेवाले हरअेक कामके लिअे अुसे वेतन चाहिये। और केवल वेतन ही नहीं चाहिये, साथमें भत्ता भी चाहिये, यात्राखर्च भी चाहिये और सुख-सुविधाअें भी चाहियें। फिर यह सब पैसेके रूपमें चाहिये। वह काम पर जाय तो गाड़ीका टिकट देने और वहां पर खाना खिलानेसे काम नहीं चलेगा; टिकटके और खाना-खर्चके नियत दरोंके अनुसार नकद पैसे दो, ताकि अुनमें से कम खर्च करके वह बाकीके पैसे बचा सके!

अिस तरह देश नीचेसे पूंजीपतियोंके और अूपरसे वेतन-जीवियोंके पाटके बीचमें पिसता है। अिन दोनोंको पैसा चाहिये। पूंजीपतियोंको भारी नफा और अच्छा ब्याज चाहिये और अिसलिअे व्यापार चाहिये; वेतन-जीवियोंको बड़े-बड़े वेतन चाहियें और अिसलिअे बड़े-बड़े कर चाहियें।

सारी दुनियाके कुशलसे कुशल अर्थशास्त्री या बड़ेसे बड़े गृह-मंत्री या कोअी भी राजनीतिक दल अिस पद्धतिको प्रजाका हित करनेवाली नहीं बना सकते। अेकके बाद अेक सभी तंत्र टूट जानेवाले हैं। कोअी भी व्यवस्था टिक नहीं सकती। ताकतवर कमजोरको लूट-मार कर ही जिन्दे रहेंगे। प्रजाको यदि जीवन-दान चाहिये, तो अिस पद्धतिको जड़मूलसे बदलना ही होगा।

हमारे देशकी सच्ची संपत्ति हमारी प्रजा और हमारी जमीन तथा खानोंकी अुपज है, रिजर्व बैंकमें छपनेवाले कागजके टुकड़े या अुनके लेन-देनका व्यापार नहीं। करके लिअे संस्कृतमें दान शब्द है। गुजरातीमें अुसे 'दाण' भी कहते हैं। पाठशाला चलानी हो तो विद्वानोंसे मुफ्त विद्यादानरूपी कर मिलना चाहिये। सफाओ करनी हो तो लोगोंको खुद झाड़ने-बुहारनेके लिअे निकलना चाहिये। रास्ते बनाने हों तो अिंजीनियरोंको मुफ्त मार्गदर्शनका और मजदूरोंको मुफ्त मेहनतका दान करना चाहिये। बहुतसे काम हाथों-हाथ हो जाने चाहियें। वेतन नाममात्रका होना चाहिये।

अिस तरह यदि पंचायतों, म्युनिसिपैलिटियों, धारासभाओं, पार्लमेन्टों, कोर्ट-कचहरियों, वकीलों, डॉक्टरों, दुकानदारों वगैराके व्यवहार चलेंगे, तो ही देशके तंत्र अच्छी तरह चल सकेंगे और सोची हुअी योजनायें पूरी हो सकेंगी। वर्ना श्री छगनभाओको जिस बदनामीका डर है, वह आये बिना नहीं रहेगी। अिसे आजकी या दूसरी कोअी दिल्लीकी सरकार या प्रदेशोंकी सरकारें नहीं रोक सकेंगी; और न पूंजी और वेतनके आधार पर काम करनेवाला कोअी राजनीतिक दल ही अिसे रोक सकेगा। अिस चीजको हम आज समझें या पच्चीस वर्ष तक मुसीबतें झेलकर और ठोकरें खाकर समझें, लेकिन समझेंगे तभी हमारी स्थिति सुधर सकेगी।

वर्धा, २५-५-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(गुजरातीसे)

हरिजनसेवकोंकी कमी

२० मअीकी शामको पूनाकी बोकरवाड़ी नामक मांग बस्तीमें अेक छोटीसी सभा हुअी, जिसमें महाराष्ट्र ह० से० संघके दोनों मंत्री श्री अुपाध्ये और श्री जी० अग्रवाल और पूना जिला ह० से० संघके अध्यक्ष श्री जी० अेम० गुप्ते तथा मंत्री श्री टी० डी० गायकवाड़ अुपस्थित थे।

श्री वियोगी हरिने अपने भाषणके दरमियान कहा:

"पूज्य ठक्कर बापाने आजीवन दलित और पीड़ितोंकी जो निष्ठापूर्वक सेवा की, अुसका बोझ आज हमारे दुर्बल कन्धों पर आ पड़ा है। हम सबको अुनके छोड़े हुअे काममें पूरा योग देना चाहिये। यही अुनका पुण्य श्राद्ध होगा। हम किसीको अूंची या नीची तथा बड़ी या छोटी जातिका नहीं मानते। झाड़ू देनेवाला मेहतर और ज्ञान-दान देनेवाला ब्राह्मण दोनों समान हैं। हरिजन-सेवक संघके दो मुख्य काम हैं: अस्पृश्यता-निवारण और दलित जनोंकी सेवा। सेवा भी अैसी कि अुसमें स्वार्थसाधनकी गंध भी न हो। हमारे संघके कार्यक्रममें कोअी राजनीतिक हेतु नहीं है। अच्छा हो कि हरिजनसेवक अधिकारों और पदोंके लोभमें न पड़ें।

"ये जितने हरिजन बच्चे सामने बैठे हैं, सब बाल गोपालके रूप ही तो हैं। अुनकी सेवासे जो आनन्द मिलता है, वह धारा-सभाओंमें कहां रखा है? काम तो अितना पड़ा है, पर आज रचना-त्मक कार्य करनेवालोंका दुष्काल पड़ रहा है। अैसा लगता है कि धीरे-धीरे लोग हरिजनसेवाके कार्यको छोड़ते जा रहे हैं। राज-नीतिक काममें जो लुभावना आकर्षण है, वह अैसे सेवाकार्योंमें लोगोंको दिखाओ नहीं देता। मैं अभी अुड़ीसा और बिहारका प्रवास करके लौटा हूं। सब जगह अैसी ही अुपेक्षा और दुरवस्था देखनेमें आओ। कलकत्ता, कानपुर, पटना सभी शहरों और गांवोंमें हरिजनोंकी अवस्था शोचनीय है। गांधीजीका जय जयकार तो हम सब बोलते हैं, पर निःस्वार्थ जनसेवा रूपी तलवारकी धार पर कौन चढ़े? कबीरदासकी अेक साखी है:

कबिरा खड़ा बजारमें लिये लुकाठी हाथ,
जो घर जालै आपना, चले हमारे साथ।

"पर अिसे सुनने और सुनकर अमल करनेवाले कितने हैं? मैंने पूना नगरकी कअी हरिजन-बस्तियां अिन दो दिनोंमें देखीं।

www.vinoba.in

कुछ बस्तियोंको देखकर व्यथा हुअी। अिस नगरीके साथ तिलक और गोखलेके पुण्यनाम जुड़े हुअे हैं, परन्तु महार और मांग बस्तियोंकी यहां भी वैसी ही शोचनीय दशा है, जैसी दूसरी जगहोंमें है। म्युनिसिपैलिटीने कुछ नये मकान बनवाये हैं, यह संतोषकी बात है। पर अभी अुसके सामने बहुत बड़ा काम करनेको पड़ा है। यह भी संतोषकी बात है कि यहां सफाअी करनेवाले कर्मचारियोंको ७५ रु० मासिक अच्छा वेतन मिलता है। अुत्तर भारतके अनेक स्थानोंमें तो ४०, ३०, २२ और कहीं कहीं तो साढ़े अठारह रुपये और बारह रुपये मासिक वेतन मिलता है।

"आज कानून द्वारा छूतछात दूर हो गयी, पर अितनेसे ही संतोष नहीं मान लेना चाहिये। आप लोगोंको चाय-घरों व नाअीकी दुकानोंमें जाना चाहिये और विरोधका सामना करने तथा कष्ट अुठानेके लिअे भी तैयार रहना चाहिये। ह० से० संघके कार्यकर्ता आपको मिले हुअे अधिकारोंकी चौकीदारी करेंगे और अुनका अुपभोग करानेमें आपको मदद देंगे। आप लोग बार-बार अुनकी सेवा-सहायता लें। हरिजन बच्चोंके लिअे पृथक हरिजन पाठशालाअें खुलवानेका समय अब चला गया। हरिजनसेवक सामान्य स्कूलोंमें हरिजन बच्चोंको अधिकसे अधिक सख्यामें दाखिल करायें।"

अन्तमें श्री जी० आर० अग्रवालने अपने संक्षिप्त मराठी भाषणमें कहा कि चुनावों या राजप्रकरणके साथ ह० से० संघके कार्यकर्ताओंका कोअी वास्ता नहीं है। राजनीतिसे अलग रहकर शुद्ध हरिजनसेवा करना ही अुनका ध्येय है।

श्री गायकवाड़ने अंतमें कहा कि पूना शहरमें चाय-घरों व नाअीकी दुकानों पर हरिजनोंके लिअे कोअी रोकटोक नहीं है। गांवोंमें असुविधायें अवश्य हैं। पूना शहरमें असल कमी तो विद्यार्थियोंके लिअे छात्रावासोंकी है। पर्याप्त रूपमें पाठ्य सामग्री भी आजकल अुनको नहीं मिलती।

[द्वारा मंत्री, हरिजनसेवक संघ, दिल्ली]

पन्नाअी आश्रम

अन्न, वस्त्र और घर हमारी मुख्य आवश्यकताअें हैं। अिनके कच्चे मालका अुत्पादन किसान ही करता है। अिस दृष्टिसे देखें तो अर्थ-अुत्पादनकी बुनियाद किसान ही है। लेकिन हम जानते हैं कि वह गरीब है और अुसकी अुपेक्षा की जाती है। अैसा क्यों होता है? अुसके हककी चीज अुससे कौन छीन लेता है? क्या वह अपना काम योग्यतासे नहीं करता? या अिसमें जमीनका दोष है? अिन और अैसे दूसरे प्रश्नोंका जवाब कअी बार कअी तरहसे दिया जा चुका है। लेकिन अिनमें से ज्यादातर जवाब किताबी ज्ञान रखनेवाले पंडितोंने ही दिये हैं। आवश्यकता अिस बातकी है कि हम प्रत्यक्ष खेती-काम करें और जो बाहरी कारण अिसमें विघ्न डालते हैं, अुनके प्रत्यक्ष निराकरण द्वारा अिस समस्याका सही हल ढूंढें। अैसा करेंगे तभी हमें समस्याकी पूरी, निर्दोष और निश्चित जानकारी हो सकेगी।

अिसी अुद्देश्यसे अखिल भारत सर्व-सेवा-संघने 'पन्नाअी आश्रम' खोला है। अभी १८ मअी, १९५१ को सेलडोहमें आचार्य कृपालानीने अिसका अुद्‌घाटन किया। यह आश्रम मेरे संचालनमें काम करेगा। 'पन्नाअी' शब्द तामिलका है, जिसका अर्थ है खेती।

सेलडोह, जहां आश्रम खोला गया है, ७०० आदमियोंकी बस्तीका छोटासा साधारण गांव है। वर्धा-नागपुर सड़क पर, वर्धासे २० मील और नागपुरसे २८ मील पर, यह वर्धा जिलेका आखिरी गांव है। जी० आअी० पी० लाअिन पर, गांवसे ४ मील दूर, सिन्दी सबसे नजदीकका रेलवे स्टेशन है। सिन्दी पोस्ट-आफिससे वहां डाक सप्ताहमें अेक बार पहुंचती है। गांवमें जनपद-सभा द्वारा चालित अेक प्राथमिक पाठशाला है, जिसमें ६९ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

गांवमें करीब २००० अेकड़ जमीनमें खेती होती है। गांव सतपुड़ा पहाड़की तराअीमें है, जिससे पानी खूब मिलता है तथा वनस्पतिकी भी कोअी कमी नहीं है। पहाड़ पास होनेके कारण जमीन स्वभावतः अूंची-नीची है।

यह सब होते हुअे भी गांव गरीब और गिरी हुअी हालतमें है। यद्यपि कहा जाता है कि राजा रघुजी भोंसलेसे गांवका घनिष्ठ सम्बन्ध था और अुनके समयमें वह बड़ी अुन्नति पर था।

गांवके लोगोंका निर्वाह मुख्यतः खेतीसे होता है। दूसरे धन्धे धीरे-धीरे मर गये हैं। अभी भी यहां तेलियोंके ४० घर हैं, लेकिन घानी अेक भी नहीं है। थोड़ेसे घर गोंडोंके भी हैं।

फसलोंमें जुवार और कपास मुख्य हैं; कपास अुनकी व्यापारिक अुपज है।

मवेशियोंकी हालत भी अुतनी ही दयनीय है।

पांच मीलके घेरेमें चार गांव और हैं। वे भी अैसी ही गिरी हुअी हालतमें हैं।

आश्रमका मुख्य काम संतुलित खेती होगा। साथमें खेतीके साथ चलनेवाले दूसरे धन्धे भी होंगे। अिनके द्वारा ही आश्रम अपने परिवारका निर्वाह करेगा। आश्रम गांवके जीवनसे पूरा मेल रखेगा और गांवके पुनर्निर्माणके काममें गांवके लोगोंका सहकार लेगा। गांवमें अेक बाल-मन्दिर, अेक बुनियादी पाठशाला, अेक आरोग्य-मन्दिर, और अेक गांव-हितकारी केन्द्रकी आवश्यकता है। अिन सब कामोंमें गांवके लोग पूरी मदद करनेके लिअे तैयार हैं।

आश्रममें तीन श्रेणियोंके कार्यकर्ता होंगे: १. सदस्य, २. सहायक और ३. साथी।

१. सदस्य पूरे समयके कार्यकर्ता होंगे और अुन्हें जो भी काम आश्रमकी ओरसे दिया जायगा अुसे वे करेंगे। युक्ताहारके लिअे आवश्यक सारी सामग्री अुन्हें दी जायगी। रसोअी अपनी अलग-अलग कर सकते हैं। रहनेके लिअे घर मिलेगा और कपड़े तैयार करनेके लिअे कपास मिलेगी। कुछ थोड़ासा पैसा भी अुन्हें दिया जायगा। अुनके बच्चे बुनियादी पाठशालामें पढ़ेंगे। सदस्य आश्रमके सब कामोंमें पूरा भाग लेंगे।

२. खेतीके सिवा, हमारे अन्य कार्यक्रममें गांवके जो लोग भाग लेंगे, वे हमारे सहायक होंगे। वे हमारे थोड़ा समय देनेवाले मानदी (अवैतनिक) कार्यकर्ता होंगे।

३. गांवके बाहरसे, दो वर्ष या ज़्यादा समयके लिअे, हमारे कार्यक्रमका निरीक्षण और अध्ययन करनेकी अिच्छासे जो लोग हमारे साथ रहनेके लिअे आयेंगे और रहते हुअे हमारे काममें पूरा हाथ बटायेंगे, वे हमारे साथी होंगे। अुन्हें आश्रमकी ओरसे युक्ताहार मिलेगा, कपड़ोंके लिअे कपास मिलेगी, रहनेके लिअे जगह मिलेगी; पर पैसा नहीं मिलेगा। व्यवहारमें अुनकी स्थिति हमारे अस्थायी सदस्योंकी होगी।

आशा है, आश्रम अिस बरसातके बाद पूरी तेजीसे चलने लगेगा। जिन लोगोंको अिस नये प्रयोगमें दिलचस्पी हो और भाग लेनेकी अिच्छा हो, वे मगनवाड़ी, वर्धाके पते पर लेखकसे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

(अंग्रेजीसे) जे० कॉ० कुमारप्पा

शिवरामपल्ली सम्मेलनकी रिपोर्ट

સર્વોદય સમ્મેલન, શિવરામપલ્લીકી કાર્રવાઅીકી હિન્દી રિપોર્ટ છપકર તૈયાર હો ગયી હૈ, ઔર મંત્રી, સર્વ-સેવા-સંઘ, સેવાગ્રામસે ૧ રુ૦ કીમત પર મિલ સકતી હૈ। યહ રિપોર્ટ હિન્દી 'સર્વોદય'કે મઅી માસકે અંકમેં ભી પ્રકાશિત હુઅી હૈ।

વર્ધા, ૫-૬-'૫૧ કિ૦ ઘ૦ મ૦

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१६ जून १९५१

हाथकरघा-अुद्योगके अुसूल

हाथ-करघेकी समस्या पर श्री हरेकृष्ण महेताबके लेखका और श्री श्रीकृष्णदास जाजू द्वारा दिये गये अुसके अुत्तरका सारांश पिछले अंकमें प्रकाशित हुआ है। पाठकोंने देखा होगा कि श्री जाजूजीने अपने जवाबमें काफी संयमसे काम लिया है। मुझे डर है कि श्री महेताबने जिस तर्कका आश्रय लिया है, अुससे पाठकोंके दिमागमें अुलझन ही पैदा होगी, सवाल पर ज्यादा साफ विचार करनेमें कोअी मदद नहीं मिलेगी। हो सकता है कि अिस विषयमें अुनका अपना दिमाग ही साफ न हो। क्योंकि जो तर्क अुन्होंने पेश किये हैं, अुनसे यह प्रगट होता है कि कपड़ा-अुद्योगके क्षेत्रमें मुख्तलिफ प्रतियोगियोंमें से किस अेकको चुनना है या प्रमुखता देनी है, अिस सवाल पर सरकारके या अुनके या दोनोंके ही मनमें कोअी स्पष्ट कल्पना नहीं है। और यही कारण है कि किसी अमुक समय पर जो तबका सबसे ज्यादा शोरगुल करता है, वे अुसीको खुश करनेकी नीति पर चलते हैं। कोअी सरकार अगर अैसा कहे कि तेल और बिजली आदि शक्तियोंसे परिचालित यंत्रोंका आविष्कार जबसे हुआ, तबसे हाथ-अुद्योगोंकी आर्थिक अुपयोगिता खतम हो गअी; अिसलिअे अब अुन्हें समेट लेना चाहिये और अुनमें लगे हुअे कारीगरोंको दूसरे पेशे चुन लेने चाहिये। और अगर अिस आधार पर वह हाथ-अुद्योगोंमें अपना अविश्वास जाहिर करें, तो वह अेक स्पष्ट नीति हो जाती है। अुस हालतमें सरकार अुन बेकार हुअे कारीगरोंको गुजरेके लिअे जब तब कुछ आर्थिक मदद देगी, लेकिन अुन्हें यह अधिकार नहीं होगा कि वे सरकारसे अपने हाथ-अुद्योगके लिअे किसी अैसे कच्चे मालकी मांग करें, जिसकी जरूरत यंत्र-अुद्योगोंमें भी होती है। लेकिन श्री महेताब अैसा कहनेके लिअे तैयार नहीं हैं, और फिर भी अुनके लिअे आवश्यक कच्चा माल मुहैया करनेकी जिम्मेदारी चरखा-संघ पर डालना चाहते हैं। और अिसकी शिकायत करते हैं कि वह अैसा नहीं कर रहा है। लेकिन अैसा करते हुअे वे अपने लेखकी पहली और अन्तिम कंडिकाओंमें जो परस्पर विरोध है, अुसे भूल जाते हैं। अपने लेखकी पहली कंडिकामें अुन्होंने खुद यह विधान किया है कि गांधीजी यह मानते थे कि जब तक हाथ-कताअी व्यापक पैमाने पर नहीं होती, तब तक हाथ-करघेकी समस्या हल नहीं होगी; लेकिन गांधीजीके समयसे परिस्थिति अब अितनी बदल गयी है कि यह सवाल व्यापक हाथ-कताअीके बिना भी हल किया जा सकता है। अब अगर श्री महेताबका यह कहना सही है, तो हाथ-करघेके बुनकरोंका सवाल हल करनेके लिअे हाथ-कताअीको फैलानेमें चरखा-संघकी कथित असफलता कैसे आड़े आ सकती है? अपने अुक्त मतके अनुसार तो अुलटे अुन्हें चरखा-संघके ट्रस्टियोंको यह सलाह देनी चाहिये कि वे संघको समेट लें और अेक दूसरा संगठन सूतकी छोटी-छोटी मिलोंका जाल फैलानेके लिअे बनावें। अगर अुन्होंने अैसा कहा होता, तो वे विसंगतिके दोषसे बच जाते और अुद्योगपतियोंके साथी मद्रासके 'मेल' जैसे कुछ अखबारोंकी, जो खादी-योजनाका जोरदार विरोध करते हैं, प्रशंसा भी अुन्हें मिलती। लेकिन अपने लेखके अन्तमें जो ठोस सलाह अुन्होंने दी है, वह तो यह है कि:

> "व्यक्ति और खानगी संस्थायें आगे आयें और हाथ-कताअीके द्वारा सूत-अुत्पादनका काम हाथमें लें, और कपड़ेके विषयमें प्रादेशिक स्वावलम्बनका सम्पादन करें। अूपर मैंने जिन समस्याओंका निर्देश किया है, अुनका सही और सच्चा हल यही है।"

श्री महेताबने देशके विभाजनसे अुत्पन्न परिस्थितियोंके परिवर्तनकी बात कही है। ये परिवर्तन जो भी हों, अुनसे नीचे लिखे विधानोंमें कोअी फर्क नहीं पड़ता:

१. आम देहाती जनताको आंशिक और हाथ-करघेके बुनकरोंको पूरा काम देकर व्यापक बेकारीकी समस्याका हल सिर्फ हाथ-कताअी ही कर सकेगी।

२. यदि बिजलीके केन्द्रित या विकेन्द्रित करघे बंद कर दिये जायं और यंत्रोंका अुपयोग सिर्फ कताअीके लिअे ही हो, तो हाथ-करघेके बुनकरोंको काम देना सम्भव हो सकता है, लेकिन आम जनताको आंशिक काम देनेका सवाल तब भी हल नहीं होगा।

३. हाथ-कताअी या हाथ-करघेकी बुनाअी तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक अुनमें से किसीको भी मिलकी प्रतियोगिताका मुकाबला करना पड़ेगा।

४. अिसलिअे या तो मिल-अुद्योग बिलकुल बंद होना चाहिये, या खादी-अुद्योगके साथ अुसका मेल बैठाना चाहिये; मिलें निर्यातका कपड़ा बनायें और खास कामोंके लिअे जरूरी अैसा कपड़ा बनायें, जो करघे पर तैयार नहीं हो सकता।

५. किसी राष्ट्रके लिअे अिससे ज्यादा महंगा और कुछ नहीं होता कि वह अपनी प्रजाको बेकार रखे, जब कि प्रजाकी संख्या — जिसे खिलानेकी जिम्मेदारी अुस पर है — लगातार बढ़ रही हो।

६. यदि हम सारा माल, जहां तक संभव हो शक्ति-चालित यंत्रों द्वारा ही बनायें, तो अपने करोड़ों देशवासियोंको पर्याप्त काम देनेका, मनुष्यकी बुद्धि जहां तक जाती है वहां तक, कोअी अुपाय नजर नहीं आता। चुनांचे हमें प्रति वर्ष काफी बड़ी संख्यामें अपने मनुष्यों और पशुओंको मारनेकी ठोस व्यवस्था करनी पड़ेगी, ताकि यंत्रोंकी अुन्नति होती रहे और बचे हुअे लोगोंका जीवन-मान अूंचा अुठता रहे।

७. अिस नाशके लिअे हमें नीचे बताये हुअे हिंसक अुपायोंका आश्रय लेना होगा: भुखमरी बढ़ाना, लाचारों और बेबसोंकी हत्या करना, निर्वासन करना, नालायक स्त्री-पुरुषोंको बांझ करना, जाति, धर्म या वादके नाम पर कत्लेआम चलाना, अुपनिवेश बसानेके लिअे देश जीतना, विश्वयुद्ध निर्माण करना, वगैरा।

८. अगर अैसी हिंसा न करनी हो तो हरअेक सरकारको विदेशी व्यापार बढ़ाने और जीवन-मान अूपर अुठानेके नाम पर विलासको प्रोत्साहन देनेकी अपेक्षा अपनी प्रजाको पूरा काम देनेकी अपनी जिम्मेदारीको ज्यादा महत्त्व देना चाहिये।

९. मिल, हाथ-करघे या खादीके कपड़ेकी पैसेकी भाषामें बतायी जानेवाली तथाकथित कीमतोंमें जो फर्क होता है, वह चीजोंके सस्तेपनकी कसौटी नहीं है। परंतु लोगोंको अपने शरीरके पोषणके लिअे जितनी शक्ति जगतसे लेनी पड़ती है, अुसमें से तैयार मालके रूपमें वे कितनी वापिस देते हैं, अिसका फर्क ही सस्तेपनकी सच्ची कसौटी है।

अूपर किये गये विधान आज भी अुतने ही सही हैं, जितने कि वे आजादी मिलने या विभाजन होनेके पहले थे। और अिन बातों पर ही सरकारको अपना निर्णय साफ कर लेना है। सवाल यह है कि श्री महेताबका विश्वास यांत्रिक कताअी और यांत्रिक करघोंमें है या चरखोंमें और हाथ-करघोंमें। यदि चरखों और हाथ-करघोंमें अुनका विश्वास है, तो केन्द्रीय सरकारके अेक अधिकारप्राप्त मंत्रीके नाते अुन्हें अिस दिशामें चरखा-संघके मंत्री बनकर वे जितना कर सकें अुसकी अपेक्षा बहुत ज्यादा काम

www.vinoba.in

कर सकना चाहिये। लेकिन अगर अुनका विश्वास मिलोंमें और यंत्र-करघोंमें हो, तो वे चरखा-संघसे कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि वह अुनकी विरोधी औद्योगिक नीतिके होते हुअे खादीकी नीतिको सफल कर दिखावे? अुस हालतमें यही न होगा कि जनताका वह पैसा, जिसे सरकार खादी और ग्रामोद्योगों आदिके साथ खिलवाड़ करनेमें जाया करना चाहती है, चरखा-संघके हाथों बरबाद होगा?

वर्धा, २१-५-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

आमकी गुठलीकी गरीके अुपयोग

आमकी गुठलीकी गरीका आहार तथा दूसरे कामोंके लिअे क्या अुपयोग हो सकता है और कैसे, अैसी पूछताछ कुछ लोगोंने की है। श्रीमती लीलावती मुंशीने मेरे पास अिस विषय पर 'भारतीय खेती-संशोधन संस्था', नयी दिल्लीके रसायन-विभाग द्वारा तैयार की गयी अेक रिपोर्ट भेजी है, जिसमें अिस विषयकी लगभग पूरी जानकारी दी गयी है। अिस सिलसिलेमें मैसूरकी 'टेक्नालाजिकल रिसर्च अिन्स्टिट्यूट' और भी खोज कर रही है। मुझे खेद है कि स्थानके अभावमें श्रीमती मुंशीका नोट जल्दी प्रकाशित करना संभव नहीं है; और प्रकाशनमें देर होनेसे अिस मौसमके लिअे अुसका कोअी अुपयोग नहीं रह जायगा। मैं आशा करता हूं कि श्रीमती मुंशी अुसे जनताके सामने रखनेके लिअे दूसरे अुपाय काममें लायेंगी। तब तक साधारण पाठकोंके लाभके लिअे यह सारांश काफी होगा:

१. आमकी गुठलीकी गरीका अुपयोग खानेमें हो सकता है, लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि लोग दूसरे धान्य छोड़कर सिर्फ अुसकी गरी खाकर ही रह सकते हैं। वह धान्यकी जगह नहीं ले सकती। लेकिन धान्योंकी कमी होने पर अिस गरीसे अुनकी कुछ भरपाअी हो सकती है।

२. गरीको खाने लायक बनानेका आसान तरीका यह है कि अुसे कूटकर अुसका चूरा बना लिया जाय और फिर अुसे या तो चावलके साथ पकाया जाय या पीसकर दूसरे आटेमें मिलाकर रोटी या चपातियां बना ली जायं। कच्ची गरीका स्वाद कुछ कसैला होता है और स्वादका सूक्ष्म खयाल रखनेवालों तथा नाजुक पेटवालोंको वह कदाचित अनुकूल नहीं आवेगी। लेकिन यदि अुसका चूरा बना लिया जाय और पानीसे २-३ बार धोकर थोड़ा अुबालनेके बाद पानीका कुछ हिस्सा निकाल दिया जाय, तो स्वादका कसैलापन तथा अुसके टैनिनकी अम्लता दूर हो जायगी और फिर अुसे खानेमें कोअी कठिनाअी नहीं रहेगी।

अेक दूसरा और ज्यादा सम्पूर्ण तरीका यह है कि "गरीको रात भर पानीमें भिगोकर रखा जाय और फिर पीसकर अुसकी 'पीठी' बना ली जाय। अिस पीठीको पानीमें तब तक धोया जाय, जब तक कि अुसका कसैलापन पूरा चला न जाय। धोनेके बाद जो चीज बच रहती है, अुसे सुखाकर आटेकी तरह काममें लाया जा सकता है।" — (श्रीमती मुंशीके नोटसे)। अिस तरह वह सफेद मैदे जैसी चीज बन जाती है और किसी भी दूसरे मैदेकी तरह काममें आ सकती है।

३. आमकी गरीमें दूसरे धान्योंके बनिस्बत स्नेह, चूना, फास्फेट तथा दूसरे खनीज ज्यादा मात्रामें होते हैं; अिसके सिवा शरीरको गरमी — काम करनेकी शक्ति — पहुंचानेका गुण भी अुसमें ज्यादा होता है। धोनेमें अुसके ये गुण कुछ तो कम हो जायंगे। लेकिन अगर अुसे कच्ची हालतमें खाया जाय, तो हमारे साधारण भोजनमें जो कमियां रह जाती हैं, वे पूरी हो जायंगी। लोग तो अैसा भी विश्वास करते हैं कि गरीसे आमके रसके सेवनसे पैदा होनेवाले दोष दूर हो जाते हैं।

मैं अिस नतीजे पर आया हूं कि अुसका अुपयोग दूसरे धान्योंके साथ अुनकी कमी पूरी करनेके लिअे निर्भय होकर किया जा सकता है। अकेली गरीका अुपयोग धान्यकी तरह करना संभव भी नहीं है, क्योंकि वह अितनी मात्रामें नहीं होती — मौसममें गुठलियोंके बड़े-बड़े दीखनेवाले ढेरोंके बावजूद — कि धान्यकी तरह अुसे ज्यादा दिन तक काममें लाया जा सके।

४. जानवरोंके आहारके लिअे भी अुसका अुपयोग हो सकता है। जानवर अुसे स्वादसे खाने लगें, अिसमें दो-तीन हफ्ते लग जाते हैं। लेकिन जानवरोंके स्वास्थ्य पर अुसका परिणाम बहुत अच्छा आया है। "तीन माहके निरीक्षणमें देखा गया कि जानवरोंका वजन औसतन ३३ पौंड बढ़ा और वे ज्यादा स्वस्थ और सुन्दर भी दीखने लगे।" (श्रीमती मुंशी)

यदि हमारे सामान्य धान्य पर्याप्त मात्रामें मिलें, तो आमकी गुठलियोंकी गरीका ज्यादा अच्छा अुपयोग स्टार्च, तेल तथा दूसरी व्यापारिक औषधोपयोगी वस्तुअें बनानेमें हो सकता है। जो भी हो, वह अेक कीमती चीज है और अुसे फेंकना अुचित नहीं है। वह गांवों और शहरोंमें अेक मौसमी गृह-अुद्योगके कच्चे मालकी तरह काममें आने योग्य है।

वर्धा, ५-६-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विनोबाकी पैदल यात्रा

११

तेअीसवां मुकाम

[ता० ३०-३-'५१ : रामायमपेठ : १७ मील]

रामायमपेठ जाते हुअे भिखनूर पर विनोबाजी आध घंटा रुके थे। सवेरे बुखारमें ही चले थे। अब पसीना काफी निकल आया था। बुखार कुछ कम हुआ था। पर कमजोर खूब हो गये थे। साधारणतया विनोबाजी बहुत तेज गतिसे चलनेवाले हैं और बीस मील चलकर भी कमरेमें घंटाभर घूमते रहते हैं। पर आज हर कदम अुन्हें प्रयत्नपूर्वक अुठाना पड़ रहा था। हम सबने अुन्हें भिखनूरमें रुक जानेके लिअे समझाया। पर वे बोले: "हमारे हर संकल्पमें अीश्वर साक्षी होता है। निश्चय बदलनेसे अनेकोंको तकलीफ होती है। जो निश्चय किया, अुसे पूरा ही करना है। और हमारा तो यह निसर्गोपचार चल रहा है। चलनेसे ही बुखार मिट जायगा।"

तब "पंगु चढ़ै गिरिवर गहन" — अैसी कृपा जिन पर भगवानकी रहती है, अुनके बारेमें चिन्ता करना भी व्याकुल हृदयका लक्षण है। बादमें साथियोंने श्री नारायण रेड्डीके घर मकअीकी रोटी और दहीका नाश्ता किया, और रामायमपेठके लिअे रवाना होनेके पहले विनोबाजीने गांवके लोगोंको दो वचन सुनाये

"गांव वही अच्छा, जहां कोअी अच्छा सेवक काम करता हो। आपके गांवमें नारायण रेड्डी जैसे अच्छे सेवक काम करते हैं। मैं आशा करता हूं कि अुन्हें यहां रामराज्य कायम करनेकी प्रेरणा होगी और आप सब लोग अुन्हें सहयोग देंगे।"

गांव बहुत साफ-सुथरा, सड़क अेक ही किन्तु अच्छी बड़ी, लोगोंका नारायण रेड्डी पर प्यार भी बहुत। लेकिन गांवमें 'सिंदी' शराबकी बिक्री भी बहुत होती है। कितने लोग शराब पीते हैं, यह पूछनेके बजाय यही पूछना होता है कि कितने नहीं पीते। अिसलिअे 'सिंदी' के बारेमें कहा:

"आप लोगोंको कोशिश करनी चाहिये कि गांवमें जो लाखों रुपयेकी शराब बिकती है, वह बन्द हो जाय। 'सिंदी' पीनेसे

www.vinoba.in

बुद्धिमें जड़ता आ जाती है। अिसलिअे धर्मशास्त्रोंने 'सिंदी' पीनेका निषेध किया है। गांवके सज्जन लोगोंका काम है कि वे लोगोंको समझावें और गांवमें 'सिंदी' पीना बन्द करावें।"

नारायण रेड्डीको देखकर रजाकारी जमानेकी याद ताजी हो अुठती है। बायें हाथकी दो अुंगलियां अुन्होंने रजाकारोंकी तलवारोंको भेंट कर दी थीं। जबड़ा दोनों ओरसे कटा हुआ है। कंधे पर और सिर पर जो जख्म हुअे थे, अुनके निशान कितने ताजे मालूम होते हैं! हरिजनोंकी सेवा और कांग्रेससे सहानुभूति — दोहरा अपराध था अुनका। तीन महीने दवाखानेमें रहना पड़ा था। अपने त्यागके कारण और अपनी नम्रताके कारण वे लोगोंके प्यारे सेवक बन चुके हैं। अब आगे सर्वोदयका काम करनेका वादा भी विनोबासे कर चुके हैं।

हम भिखनूरसे बिदा हुअे, परंतु रामायमपेठ अभी ढाअी मील दूर था, जहां निजामाबादकी हद खतम होती थी और मेदक जिला शुरू होता था। लोग ढाअी मील तक आगे आ गये। करीब ग्यारह बज चुके थे। मालूम हुआ कि वे काफी देरसे प्रतीक्षा कर रहे हैं। चार हजारकी बस्तीमें से करीब अेक हजार लोग स्वागतके लिअे आये थे। शांतिके साथ, रामधुन गाते हुअे, हाथमें माला लिये वे आगे बढ़े। विनोबाजीने अुनके प्रेम-प्रतीक स्वीकार किये, और जुलूस करीब बारह बजे डेरे पर पहुंचा। पसीना खूब निकल आया था।

वैसे आज जो थोड़ी-बहुत थकावट थी वह केवल कमजोरी व बुखारके कारण थी। बारह बजने पर भी धूपकी तकलीफ नहीं हुअी थी। मुझे चौपाअी याद आ रही थी — "जहं जहं जाहिं देव रघुराया, करहिं मेघ तहं तहं नभ छाया।"

स्नान करके विनोबाजी विश्राम करने चले गये। बुखार बढ़ता है या जाता है, यही चिंता हम लोगोंको सता रही थी। रामायम-पेठ न आते तो लोगोंको कितनी निराशा होती, अिसका भी खयाल हुआ। आना ही ठीक रहा। "हमारे हर संकल्पमें परमेश्वर साक्षी रहता है —" विनोबाने शुरूमें ही कहा था। "और अुसे पूरा करनेका बल भी वही देता है" — अनुभवसे अितना और मैंने जोड़ देना ठीक समझा।

शामकी प्रार्थना-सभामें विनोबाने स्वयं लोगोंसे कहा: "सुबह मेरे मनमें शंका थी कि सत्रह मीलकी मंजिल आज कैसे तय होगी। लेकिन भगवानका नाम लिया, चलना आरंभ किया और अुसकी कृपासे आज हम यहां पहुंच गये। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मुझे कोअी तकलीफ नहीं हुअी।"

फिर हरिनामकी शक्तिका अनुभव बताते हुअे कहा: "यह अेक अैसी अपार शक्ति है कि हम जितनी चाहे मांग सकते हैं। मांगो और मिले नहीं, अैसा आज तक नहीं हुआ। लेकिन मांगना कैसे, परमेश्वरके साथ नाता जोड़ना कैसे, यह समझनेकी बात है। . . . . मानवदेहका अुद्देश्य यही है कि परमेश्वरसे नाता जुड़ जाय। किसानके जीवनमें तो नित्य परमेश्वरका सम्बन्ध आता है। बारिश हुअी तो वह परमेश्वरका अुपकार मानता है, नहीं हुअी तो अुसीका स्मरण करता है। अिसलिअे किसानका जीवन अत्यंत पवित्र है। अपार कष्ट सहने पर भी फसल आने पर वह यह नहीं मानता कि वह फसल अुसके कष्टसे आयी है। वह अुसे परमेश्वरकी कृपा ही समझता है। कदम-कदम पर वह परमेश्वरके प्रति कृतज्ञता महसूस करता है।

"सब लोगोंका यही हाल है। मनुष्यकी अेक सांस भी परमेश्वरकी अिच्छाके बगैर नहीं चलती है। लेकिन कुछ लोग अपना संबंध परमेश्वरके साथ सीधा है, यह कम महसूस करते हैं। किसान ज्यादा महसूस करता है। अभी देखिये आपके अिर्दगिर्दके गांवोंमें ओले गिरे और फसलें काफी बरबाद हुअीं। अब किसान क्या करता है? वह परमेश्वरका स्मरण करता है। अिस तरह हमें अपने जीवनमें हरअेक कामका परमेश्वरके साथ सम्बन्ध जोड़ना सीखना चाहिये। अगर अिस तरह हम भगवानसे संबंध जोड़ सकें, तो हमें पता चलेगा कि अुसने हमें कितनी देनें दी हैं, कितनी नियामतें दी हैं। अुसने हमें जो नियामतें दी हैं, वे बेहिसाब हैं। अुनकी कोअी गिनती नहीं है। अुसने हम पर क्या अुपकार नहीं किया है? लेकिन अुसके अुपकारका ठीक अुपयोग करनेका भी हमें ज्ञान नहीं है।

"मैं अिधर घूम रहा हूं तो चारों तरफ सिंदीके पेड़ देखता हूं। यह तो परमेश्वरकी हमारे लिअे देन है। लेकिन हम अुसका दुरुपयोग करते हैं। अुसमें से शराब बनाते हैं और हमारी जिन्दगीको खराब करते हैं। लेकिन अगर हम अुसका ठीक अुपयोग करें, तो हमारे लिअे वह अमृतका वृक्ष बन जायगा। अुसमें से अुत्तम गुड़ बनेगा और हरअेक गांव गुड़के विषयमें स्वावलंबी बन जायगा। अगर आप सिंदीका गुड़ बनायेंगे, तो आज जो आपकी जमीनका बहुतसा हिस्सा गन्नेमें जाता है वह बच जायगा। आज हमारे देशमें अनाजकी कमी है। अिस हालतमें जितनी जमीन बच जाय अुतना अच्छा है। तो आपको दो लाभ होते। सिंदीके पेड़से गुड़ बनता और जमीनमें अनाज ज्यादा पैदा होता। लेकिन परमेश्वरकी अिस देनका अुपयोग करना हम नहीं जानते। सिंदीसे शराब बनाकर अपनी आत्मा और शरीरको हम बिगाड़ते हैं और जमीन गन्नेमें रुकती है। तो अब अिसमें परमेश्वरका क्या दोष है? अुसने तो हमको अेक भारी चीज दी थी, लेकिन अुसका अुपयोग हमने नहीं किया।

"हमारे पास जमीन पड़ी है। अुसमें से हर चीज हमको मिलती है। लेकिन अुसका अुपयोग हम सिर्फ पैसेके लिअे करते हैं। पैसेके लोभसे ही जमीनका अुपयोग करनेकी दृष्टि रहती है, तो जमीनमें से तंबाकू बनती है। परमेश्वरने हमें क्या क्या दिया और हमने अुसकी देनोंको कैसे बरबाद किया, अिसका मैं कहां तक वर्णन करूं?

"मैं सुनता हूं कि यहां पहले लोग थोड़ी कपास भी अपने अुपयोगके लिअे बोते थे। लेकिन आज लोगोंने कपास बोना छोड़ दिया। वे पैसेके लोभमें पड़कर सारा कपड़ा बाहरसे खरीदते हैं। नतीजा अुसका यह हुआ कि आप परावलंबी बन गये और अपना भार आपने व्यापारियों पर डाल दिया। मैं यह नहीं कहता कि अिस जमीनमें अगर गन्ना अच्छा होता है तो गन्ना मत बोओ। लेकिन मैं कहता हूं कि कुछ तो जमीन कपासके लिअे रखो। अिस तरह अगर देखें तो कअी चीजोंका अच्छा अुपयोग हमको सूझेगा।

"देखिये, हम लोगोंकी गायें और भैंसें हमको गोबर देती हैं। हम अुस गोबरको जलाते हैं, तो हमारी सारी खाद खतम हो जाती है। अिसी तरह मनुष्यका मल और मूत्र भी अिधर अुधर गिरता है, और अपनी सारी दुनिया हम अमंगल बनाते हैं। अुससे हमारी सेहत बिगड़ती है, हमारी सभ्यता बिगड़ती है। अगर अिस मल-मूत्रको जमीनके अंदर रखें और अुस पर मिट्टी डालें तो परमेश्वरकी कितनी अपार कृपा है अुसका अनुभव हमें आयेगा। भगवानने हमें गाय-बैल दे दिये। अगर हम अुन गायोंका दूध बढ़ाते हैं और बैलोंको मजबूत बनाते हैं, अुनको पूरा खिलाते हैं, तो अुनसे बहुत सेवा होती है। यह तो परमेश्वरकी देनका अच्छा अुपयोग होगा। लेकिन अगर हम गायोंको ठीक खिलाते नहीं और अुनको कम दाममें बेच डालते हैं, तो गायोंकी हत्या होती है। अिसका मतलब यह हुआ कि भगवानकी देनोंका हमने

www.vinoba.in

दुरुपयोग किया। परमेश्वरकी देनोंका हम ठीक अुपयोग करें और अुसका स्मरण करें, तो अिस दुनियामें कोअी मनुष्य दुःखी नहीं रह सकता।

"हम सर्वोदय सर्वोदय चिल्लाते हैं, कहते हैं कि सबका भला होना चाहिये। लेकिन परमेश्वर अपने मनमें हंसता होगा और कहता होगा कि भाअी, यह काम अितना मुश्किल क्यों लगता है। अपनी संतानके लिअे जीवन मुश्किल हो, अैसा कोअी पिता नहीं चाहता। तो अुस परम पिताने हमें निर्माण किया और हमारे लिअे ये सारे अुपकार पैदा किये। पर हम अुनका अच्छा अुपयोग नहीं करते, आपसमें झगड़ते हैं और कहते हैं कि सर्वोदय कब होगा, कब होगा।

"गांधीजी अपनी प्रार्थनामें अीश्वरका नाम लेते थे, तो अीश्वरके साथ अल्लाका नाम भी लेते थे। अब अीश्वर और अल्लामें कोअी भेद तो नहीं है। लेकिन कुछ पागल हिन्दुओंने कहा कि हम अल्लाका नाम नहीं सहन करते। वैसे ही रघुपति राघव राजाराम कहते हैं, तो कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह राम काफिरोंका शब्द है। हम अुनकी प्रार्थनामें नहीं जायेंगे। अिस तरह भगवानके नाममें भी हमने भेद निर्माण किये। जब यहां तक हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गअी, तो हम सुखी कैसे बन सकते हैं? फिर तो आपसमें लड़ना-झगड़ना ही है। अिस तरह सारे झगड़े अपने देशमें हैं और बाहरके देशोंमें भी झगड़े ही झगड़े चल रहे हैं। आप कोअी भी अखबार देखिये, तो किसीका खून किया, कहीं लूटा, कहीं लड़ाअी हुअी यही पढ़नेको मिलेगा। अुधर कोरियाकी लड़ाअी चलती है, अिधर काश्मीरका मामला चल रहा है। बोल रहे हैं कि तीसरी लड़ाअी, महायुद्ध कब होगा? मैं कहता हूं कि तीसरा महायुद्ध कब होगा, कब होगा, यों कहते जायेंगे और अुसीका ध्यान करेंगे तो वह जरूर होगा। क्योंकि जिस चीजका हम ध्यान करते हैं, वह चीज हमारे सामने खड़ी होनी ही चाहिये। अैसा ध्यान करो कि हम सारे परमेश्वरके पुत्र हैं, और हम सब अेक कुटुंबके हैं, तो आपमें कोअी झगड़ा होगा ही नहीं।

"लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तानमें जनसंख्या बढ़ गअी है। मैं कहता हूं कि आज भी हिन्दुस्तानमें अितनी शक्ति है कि हम अगर परमेश्वरकी देनोंका अुपयोग करें, तो हिन्दुस्तानमें प्रेमके साथ रह सकते हैं। यह बात भी सही है कि मनुष्यको विषयवासना रोकनी चाहिये। लोग संतान कम-ज्यादा गिनते हैं। मैं कहता हूं कि विषयवासना कम करो। अगर हम विषयवासनाको नहीं जीत सकते, तो हम अेक-दूसरेसे प्रेम नहीं कर सकते। अगर हम विषयवासनाको जीतते हैं, तो जो भी प्रजा होगी, वह परमेश्वरकी भक्त होगी, और अुसका दुनिया पर भार नहीं होगा। अिस दुनियामें मनुष्य ज्यादा हैं या कम हैं, अिसका पृथ्वी कोअी भार महसूस नहीं करती। लेकिन मनुष्य सज्जन हैं या दुर्जन, अिसका भार महसूस करती है। पृथ्वीको मनुष्यकी संख्याका भार नहीं, मनुष्यके दुर्गुणोंका भार लगता है। हम काम-क्रोधादिको जीतें, अेक-दूसरेसे प्यार करें, परमेश्वरकी देनोंका सदुपयोग करना सीखें, अपनी हरअेक कृतिका संबंध परमेश्वरसे जोड़ें, सुख और दुःखमें अुसका स्मरण करें, तो सर्वोदय ही होगा, और कुछ नहीं होगा।"

शामको कांग्रेसके कार्यकर्ताओंके साथ बातें हुअीं। निजामाबाद जिला अनाजके मामलेमें स्वावलंबी है। वहांके निजामसागरकी नहरोंने खुश्कीको तरीमें बदल दिया है और अुपज अनेक गुना बढ़ गयी है। रास्तेके दोनों ओर जहां तक निगाह जाती, मीलों जमीन धानकी खेतीसे हरीभरी नजर आती। मेदकमें बीच-बीचमें कहीं तालाब दिखाअी देते हैं। पर खुश्कीकी ही जिराअत है। अनाजका सवाल है। "राशनकी दुकानें भी बहुत थोड़ी हैं। और जो हैं अुनका कोटा भी देहातवालोंके हिस्सेमें पूरा नहीं पड़ता। अफसरोंके कारण लोग तंग हैं।" आदि शिकायतें भी कार्यकर्ताओंने कीं। वैसे ही अनाजकी कमी, तिस पर ये ओले। दोनों फसलें अिस बार खतम हो गअीं। अिस पर भी लेवी और लगानका जुल्म! "यदि हमारे राजमें भी अैसे जुल्म हों, तो क्या अुनका प्रतिकार न किया जाय?" अेक भाअीने सहसा सवाल पूछा। "जुल्मके खिलाफ खड़ा होना हमारा कर्तव्य है", विनोबाने समझाया, "पर यह वही कर सकता है, जो जनताकी सेवामें नित्य लगा रहता है। कांग्रेसवाले सेवा तो करते नहीं। अुनके हाथसे थोड़ी-बहुत जो सेवा होती है, अुसमें भी चुनावकी दृष्टि नहीं रहती, अैसा नहीं कहा जा सकता। अीसाअी बनानेके अंतिम अुद्देश्यसे मिशनरी लोग जिस तरह सेवा करते रहते हैं, वैसे ही अुनका भी चलता है। सेवाके काममें समाजवादी आपको सहयोग देना चाहेगा, तो आप नहीं लेंगे; क्योंकि अुसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, जो चुनाव पर असर करेगी! बिहारमें गांधी-निधिके समय अैसा हुआ है। असल बात यह है कि प्रजाको हमारे बारेमें यह यकीन होना चाहिये कि ये हमारे सेवक हैं; अिनके मनमें और कोअी भावना नहीं है। अैसी सेवा करनेवाले सेवक कांग्रेसमें आज नहीं के बराबर हैं। यहां अितने लोग सिंदी पीते हैं। लेकिन कितने कांग्रेसवाले अुन्हें जाकर समझाते हैं? क्या पांच आदमियोंको भी अुन्होंने सिंदीके व्यसनसे छुड़वाया है? यहां अितने अीसाअी मिशन चलते हैं। मराठवाड़ामें क्यों नहीं चल सकते? यहां पर लोग अितने पिछड़े हुअे हैं, परंतु अुन्हें अुपेक्षासे देखा गया। गांधीजीने रचनात्मक कामकी अितनी संस्थाअें खड़ी कीं — हरिजनसेवक संघ, कस्तूरबा ट्रस्ट, चरखा संघ, आदि। पर कितने कांग्रेसवाले अिन कामोंमें हिस्सा लेते हैं? वे समझते हैं, यह काम हमारा नहीं, दूसरोंका है।"

प्रश्न: तो क्या आप पार्लमेंटरी कामको देशके लिअे जरूरी नहीं समझते? और अगर कांग्रेसवाले अुसमें हिस्सा लेते हैं, तो क्या वह सेवा नहीं है?

विनोबा: यानी आप लोग पार्लमेंटरी काम ही करना चाहते हैं न? बस, यही तो मैं कह रहा था। तो फिर आपकी ओर यदि जनता और सरकार दोनों शककी निगाहसे देखें, तो आपको शिकायत क्यों करनी चाहिये? दूसरे लोग काम करते हैं, तो अुन्हें आप भी शककी निगाहसे देखते हैं।

प्रश्न: तब फिर कांग्रेसके लोगोंको क्या करना चाहिये?

विनोबा: सेवाके कामोंमें जुट जाना चाहिये। जब लड़ाअीका काम नहीं रहता, तो फौजियोंसे खेतीका काम करवाते हैं। कांग्रेसवालोंको अब रोज विशेष क्या काम रहता है? अेक रुपयेवाले मेंबर बनवाना, रजिस्टर रखना, चुनाव कराना, पत्रव्यवहार करना, बस! फिर अुनके कामका हाल यह कि 'अिफेक्टिव' मेंबर बनानेका कानून बना, तो हजारों 'डिफेक्टिव' मेंबर भी बना लिये गये। जहां कांग्रेस पावर लेनेवाली संस्था बन गयी, वहां गरीबोंको अुसमें क्या स्थान मिलनेवाला है? फिर मेंबर बनाना, मेंबरशिपके फार्म किन्हें देना किन्हें न देना, वक्त पर देना न देना, आदि कितनी झंझटें अिसमें नित चलती रहती हैं। क्या यह सब सेवा है?

प्रश्न: विनोबाजी, तो हमें क्या करना चाहिये? क्या कांग्रेसको छोड़ देना चाहिये? कभी-कभी यह विचार बड़ा तीव्र हो अुठता है।

विनोबा: छोड़ें नहीं। अितनी बड़ी संस्था है, अुसका अुज्ज्वल अितिहास है। लेकिन आज अुसके सदस्योंके सामने कोअी प्रोग्राम नहीं है, यही बुराअी है। कांग्रेसवालोंको प्रोग्राम बनाकर काममें लग जाना चाहिये। मद्रास और बंबअी सरकारने शराबबंदीका कानून बनाया। क्यों नहीं कांग्रेसवाले अिस प्रोग्रामको कामयाब बनानेमें जुट गये? मेरी समझमें नहीं आता कि अूपरके दफ्तरोंसे जो सर्क्यूलर

www.vinoba.in

कांग्रेसके छोटे दफ्तरोंमें आते हैं, अुनमें प्रोग्रामका कहीं जिक्र क्यों नहीं रहता? सेवा भी न करें और प्रतिष्ठा भी कायम रहे, यह कैसे हो सकता है? पुरानी प्रतिष्ठा पर आप लोग काम चला रहे हैं। पर यह अधिक दिनों तक तो नहीं चल सकता।

* * *

मैं देख रहा था कि कार्यकर्ता अेकाग्र होकर सुन रहे हैं। अुन्हें अिस तरह साफ बातें बतानेवाला भी कोअी नहीं मिला था। पिछले दिनों यहां जो काम हुआ, अुसमें मार्क्सकी विचारधारा रखनेवालोंका नेतृत्व ही अुन्हें मिला था। अुस संबंधमें भी कुछ विचार कार्यकर्ताओंके मनमें चल रहे थे। अेक भाअीने पूछा:

मार्क्सिजम पर विश्वास करनेवाला अगर हिंसा करता है, तो गलती तो नहीं करता?

विनोबा: मार्क्स अगर हिन्दुस्तानमें होता, तो अिस तरह नहीं करता, न सोचता ही। वह बुद्धिमान आदमी था। जहां जनताकी अपनी हुकूमत है, वहां हिंसक शक्तियों पर काबू पानेके लिअे आपकी सरकारको काफी शक्ति लगानी पड़ेगी। फिर अुसे जनसेवाका मौका कम मिलेगा। अिधर मार्क्सवादीको भी, जो कि हिंसा करता है, सेवाका अवसर नहीं मिलेगा। सेवाके अभावमें और हिंसक प्रवृत्तियोंके कारण चुनावमें यशस्वी होनेकी बात तो दूर रही, खड़े रहनेका भी मौका नहीं मिलेगा। आखिर पावर तो चुनाव जीतनेसे ही हाथमें आ सकता है न?

प्रश्न: क्या मौजूदा तरीकोंसे हुकूमत कम्युनिस्टोंको रोक सकती है? पांच सालसे हुकूमत कोशिश कर रही है, पर न कम्युनिस्टोंका प्रचार कम हुआ, न जुल्म कम हुआ।

विनोबा: लेकिन अिस काममें केवल कम्युनिस्ट ही तो नहीं हैं। डाकू भी हैं, गुंडे भी हैं। अिन दूसरे लोगोंसे प्रजा दिन ब दिन तंग आती जाती है। जहां प्रजा तंग हुअी, कम्युनिस्टोंका काम खतम हुआ। जब कम्युनिस्ट और डाकू दोनों डाका डालते हैं, तो डाकुओंकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, कम्युनिस्टोंकी घटती है; और कम्युनिस्ट फिर अेक रोज अैसे ही खतम हो जाते हैं।

प्रश्न: कम्युनिस्टोंके तोड़फोड़के तरीकोंके बावजूद जनताके मनमें अुनके लिअे सहानुभूति क्यों है?

विनोबा: जब जनता देखेगी कि कम्युनिस्टोंके साथ जानेसे कोअी लाभ नहीं, बल्कि नुकसान ही है, तो वह खुद ही अुनका साथ छोड़ देगी।

प्रश्न: लेकिन आज तो स्थिति यह है कि मालगुजार रिआयाको तंग करता है। कोर्टमें बरसों मामले चलते हैं। रिआया मालगुजारके सामने टिक नहीं पाती। अुससे बाज आनेके लिअे वह कम्युनिस्टोंका सहारा लेती है। अैसी हालतमें क्या किया जाय?

विनोबा: दूसरा और सही रास्ता दिखाया जाय।

प्रश्न: वह क्या?

विनोबा: जनतामें जाकर सेवामें जुट जाना और आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रहका सहारा लेना। लेकिन सत्याग्रही सबको निर्भय करके सत्याग्रहका सहारा लेता है। गांधीजीके बारेमें सबको अैसा विश्वास था और अिसीलिअे वे लोगोंको अनुप्राणित कर सके थे। जिसे अैसा दर्शन होगा, वही यह काम कर सकेगा।

रातको मैंने देखा कि हमारे निवासके द्वार पर हथियारबंद पुलीसका पहरा बैठा है। डी० अेस० पी० महोदयकी आज्ञासे वे आये थे। मैंने अुसी वक्त पत्र लिख कर पुलीस हटानेकी प्रार्थना की। मेरी प्रार्थनाको स्वीकार करते हुअे डी० अेस० पी० ने बताया कि यह हिस्सा कम्युनिस्टोंके अुपद्रवोंसे पीड़ित है। सरकारको अपनी जिम्मेदारी अदा करनी चाहिये। वे बड़े असमंजसमें थे। लेकिन मैं भी लाचार था। विनोबाजी गहरी नींदमें सो रहे थे। अुन्हें पूछ भी नहीं सकता था। लेकिन जानता था कि जिसे सर्वत्र आत्मदर्शन हो रहा है, अुसके लिअे कम्युनिस्ट भी कोअी पराये थोड़े ही हैं। रक्षा-अरक्षाका सवाल ही अुसके लिअे नहीं था।

दा० मूं०

बीड़ीसे सावधान!

दारूसे आमदनी बन्द हो रही है और तंबाकूसे बढ़ रही है। अैसा दिखता है कि सरकारने अपना तरीका सोच लिया है। जिन्होंने अिस सालका बजट देखा होगा, अुनके खयालमें यह बात आअी होगी। अैसा दिखता है कि थोड़े बरसोंमें तंबाकूके जरिये सरकार काफी धन लोगोंसे खींच सकेगी। अिसकी तरफ लोग ध्यान दें। यदि वे अपना धन और अपना स्वास्थ्य बचाना चाहते हैं, तो तंबाकूके व्यसनसे बचकर चलें। कमसे कम अपने बच्चोंको तो अिस बुरी आदतसे बचा ही लें। स्कूलोंमें अगर शिक्षक बीड़ी पीयेंगे, घरमें बुजुर्ग पीयेंगे, तो बच्चे नहीं बच सकेंगे। बच्चोंके लिअे भी अुनको अिस चीजसे परहेज करना चाहिये। लेकिन बीड़ी कैसी बढ़ रही है? 'हरिजनबंधु' के ता० १९-५-'५१ के अंकमें हुअी बीड़ीकी चर्चामें अेक छः हजारकी बस्तीवाले गांवमें पौन लाखकी बीड़ी बिकनेका पत्र पढ़कर अेक भाअी बताते हैं:

"हमारे पास ही दौंडाअीचा नामक देहात है। वहां ५-७ हजारकी बस्ती है। वहां मेरे भाअीकी दुकान है। वह अकेला अेक लाखकी बीड़ी बेचता है। आसानीसे पांच हजारकी कमाअी हो जाती है। अैसी पांच-सात बड़ी दुकानें हैं। आज तो दुनिया बीड़ी, सिगरेट, चाय, पानपट्टी और सिनेमाके पीछे पागल हो गअी है।"

लोग अिससे सावधान रहें, तो अच्छा होगा।

म० देसाअी

हमारा नया प्रकाशन

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

अनुवादक: **सोमेश्वर पुरोहित**

आज स्त्री-पुरुष-मर्यादाके प्रश्नने विकट रूप धारण कर लिया है। अिस पुस्तकमें लेखकने स्त्री-पुरुष-सम्बन्धके सारे प्रश्नोंकी — जैसे नौजवान और शादी, ब्रह्मचर्यकी साधना, सहशिक्षा, स्पर्शकी मर्यादा, विवाहका प्रयोजन, सन्तति-नियमन, 'धर्मके भाअी-बहन' वगैरा — सर्वथा मौलिक और क्रान्तिकारी ढंगसे विस्तृत चर्चा की है। यह पुस्तक समाजके विचारशील लोगोंको अिस प्रश्न पर बिलकुल नअी दृष्टिसे सोचने और मनन करनेकी प्रेरणा देगी।

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
पंचायतोंका कारोबार	कि० घ० मशरूवाला	१२९
हरिजनसेवकोंकी कमी	वियोगी हरि	१३०
पन्नाअी आश्रम	जो० कॉ० कुमारप्पा	१३१
हाथकरघा-अुद्योगके अुसूल	कि० घ० मशरूवाला	१३२
आमकी गुठलीकी गरीके अुपयोग	कि० घ० मशरूवाला	१३३
विनोबाकी पैदल यात्रा — ११	दा० मूं०	१३३
टिप्पणियां:		
शिवरामपल्ली सम्मेलनकी रिपोर्ट	कि० घ० म०	१३१
बीड़ीसे सावधान!	म० देसाअी	१३६

www.vinoba.in